शिवजी के द्वादश ज्योतिर्लिंग

પ્રા. ઉર્વશીબેન એચ. પટેલ
વ્યાખ્યાતા સંસ્કૃત
એન.પી.પટેલ મહિલા કોલેજ,પાલનપુર

सर्वव्यापी भगवान शंकर के बारह ज्योतिर्लिंगों उनके बारह अवतार हैं । ये अवतार मंगल प्रदान करनेवाले हैं । इनका दर्शन और स्पर्श सब प्रकार का आनन्द प्रदान करता है । ये द्वादश ज्योतिर्लिंग अवतार इस प्रकार है ।

१. सोमनाथ : *द्वादश ज्योतिर्लिंगों में सबसे पहला अवतार सोमनाथ है । यह सौराष्ट्र में स्थित है । दक्ष प्रजापति ने चन्द्रमा को क्षय और कुष्ठरोग से ग्रसित हो जाने का शाप दिया था । चन्द्रमा ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की थी, उस तपस्या से प्रसन्न होकर शिवजी प्रकट हुए थे और चन्द्रमा क्षय और कुष्ठ रोगों से मुक्त हो गया था । अत: सोमनाथ ज्योतिर्लिंग का पूजन करने से क्षय और कुष्ठ रोग दूर हो जाते हैं । यहाँ एक चन्द्रकुण्ड भी है जिसमें स्नान करने से मनुष्य की सब बीमारियाँ दूर हो जाती हैं ।*

२. मल्लिकार्जुन : *यह शंकरजी का दूसरा ज्योतिर्लिंग है । यह श्री शैल पर स्थित है । यह स्थान आन्ध्र प्रदेश में है । यह भक्तों के मनोरथ पूरे करता है । भगवान शिव प्रसन्नता के साथ कैलाश से चलकर यहाँ मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए थे । पुत्र-प्राप्ति के लिए इनकी स्तुति अत्यन्त फलदायक है ।*

३. महाकाल : *शिवजी का तीसरा ज्योतिर्लिंग महाकाल है । यह उज्जैन में स्थित है । यह अपने भक्तों की रक्षा करता है । वैदिक धर्म के शत्रु दूषण नामक राक्षस को अपनी हुंकार द्वारा भस्म करने के लिए यहाँ शिव महाकाल रूप में प्रकट हुए थे । राक्षस का नाश करने के बाद वे महाकाल ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित हो गये । इस महाकाल नामक लिंग का प्रयत्नपूर्वक दर्शन और पूजन करने से मनुष्य की सारी इच्छायें पूरी हो जाती हैं ।*

४. ओंकार : *ओंकार नामक यह ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश में स्थित है । यह ज्योतिर्लिंग अत्यन्त प्रसिद्ध है । विन्ध्य पर्वत ने भक्तिपूर्वक विधि-विधान से शिवजी का पार्थिव शिवलिंग स्थापित किया था । उसी लिंग की पूजा-अर्चना से विन्ध्य की इच्छायें पूरी करने वाले महादेव प्रकट हुए । तब देवताओं द्वारा प्रार्थना करने पर भक्तों से प्रेम करनेवाले लिंगरूपी शंकर वहाँ दो भागों में बँट गये। एक ओंकारेश्वर लिंग के रूप में स्थापित हुआ और दूसरा परमेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इनमें से किसी का भी पूजन किया जाये, भक्त की सभी इच्छायें पूर्ण हो जाती हैं ।*

५. केदारेश्वर : *परमात्मा शिव के पाँचवें ज्योतिर्लिंग अवतार का नाम केदारेश्वर है । यह केदार में स्थित है । नर-नारायण के प्रार्थना करने पर शिवजी हिमालय के केदार शिखर पर स्थित हो गये । नर-नारायण दोनों ही केदारेश्वर लिंग की नित्य पूजा करते हैं । इसके दर्शन करने पर शम्भु भक्तों की सभी इच्छाओं को पूरी करते हैं ।*

६. भीमशंकर : *महाप्रभु शिव ने भीमशंकर नाम से छठा अवतार धारण किया और भीमासुर नामक राक्षस को नाश किया । शिव ने अपने भक्त राजा सुदक्षिण को पिड़ित करने वाले भीमासुर*

का वध करके अपने भक्त की रक्षा की तथा अद्‌भुत लीलाएँ कीं । राजा सुदक्षिण की प्रार्थना से भीमशंकर ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थित हो गये । यह नासिक में स्थित है और इसके निकट से भीमा नदी बहती है ।

*७. **विश्वेश्वर :** भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाले शिव का सातवाँ अवतार विश्वेश्वर नाम से काशी में हुआ । काशी में स्थापित इस विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग की विष्णु, भैरव तथा समस्त ऋषि-मुनि और देवता पूजा करते हैं । जो काशी-विश्वनाथ के भक्त हैं और नित्य उनके नामों का जप करते हैं वे सभी कामनाओं से उदासीन होकर मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं ।*

*८. **त्र्यम्बकेश्वर :** शिव का आठवाँ अवतार ब्रह्मगिरि के पास नासिक जिले में त्र्यम्बक नाम से हुआ । त्र्यम्बकेश्वर नाम से प्रसिद्ध यह शिव का अवतार महर्षि गौतम की प्रार्थना से गौतमी (गोदावरी) के तट पर हुआ था । गौतम की प्रसन्नता के लिए शिवप्रिया गंगा यहाँ गौतमी गंगा या गोदावरी नाम से प्रकट हुई ।*

*९. **वैद्यनाथ :** भगवान शिव का नौवाँ अवतार वैद्यनाथ नाम से प्रसिद्ध है । इस अवतार में अनेक लीलाएँ करने वाले भगवान शंकर रावण के लिए अवतरिण हुए थे । उन्हें यहाँ रावण द्वारा ही लाया गया था । इसी को कारण मानकर महेश्वर ज्योतिर्लिंग रूप से चिता-भूमि में प्रस्थापित हो गये । उस समय से वे तीनों लोकों में वैद्यनाथेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुए । जो कोई इनका दर्शन या पूजन करता है वह सुन्दर भोगों को भोगकर मोक्ष प्राप्त करता है ।*

*१०. **नागेश्वर :** शिव का दसवाँ अवतार 'नागेश्वर' नाम से प्रसिद्ध है । दारुक नामक राक्षस को मारने के लिए प्रभु शिव ने नागेश अवतार धारण किया । अपने भक्त सुप्रिय की रक्षा के लिए अवतार लेने वाले नागेश रूपधारी प्रभु शिव ने अनेक लीलाएँ कीं । सदा दूसरों का भला करने वाले प्रभु शिव अपने भक्तों की प्रार्थना से प्रसन्न होकर भगवती अम्बिका सहित नागेश ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थापित हैं । यह ज्योतिर्लिंग गुजरात में द्वारिका के निकट स्थित है ।*

*११. **रामेश्वर :** रामेश्वर नाम से विख्यात ग्यारहवाँ अवतार है । भगवान राम की प्रार्थना से प्रसन्न होकर प्रभु शिव ने यह अवतार धारण किया । सेतुबन्ध के अवसर पर राम ने विजय पाने के लिये शिव की पूजा की । प्रभु राम को विजय का वरदान देने वाले प्रभु शिव उनकी प्रार्थना से सेतुबन्ध पर ही रामेश्वर ज्योतिर्लिंग के नाम से स्थित हो गये ।*

*१२. **घुश्मेश्वर :** घुश्मेश्वर अवतार शंकरजी का बारहवाँ अवतार है । इस अवतार में उन्होंने अनेक प्रकार की लीलाएँ कीं, भक्तों को प्यार किया और घुश्मा को आनन्द की प्राप्ति कराई । घुश्मा का हित करने के लिए भगवान शंकर दक्षिण दिशा में स्थित देवताओं के पर्वत के निकट स्थित एक सरोवर से प्रकट हुए । घुश्मा के पुत्र को सुदेशा ने मार डाला था । उसे जीवित करने के लिए घुश्मा ने शिवजी की आराधना की । तब उनकी भक्ति से सन्तुष्ट होकर भक्तों को प्रेम करने वाले शम्भु ने उनके पुत्र को बचा लिया । इसके बाद घुश्मा की प्रार्थना से उस सरोवर में ज्योतिर्लिंग के रूप में स्थित हो गये । उस समय इनका नाम घुश्मेश्वर हुआ । जो भक्त उस शिवलिंग का दर्शन या पूजन करता है वह इस संसार में अनेक सुख भोगकर मुक्ति प्राप्त करता है ।*

संदर्भग्रंथ

१. गौड़,कन्हैयालाल शिव महापुराण-(संपादन)